जैव विकास - 9 : परिवार के लिए प्राण भी न्यौछावर

माधव गाडगिल

आम तौर पर जंतु स्वयं के प्राणों की रक्षा करने के लिए लड़ाई करते हैं। किंतु चींटियों जैसी कुछ प्रजातियों में जानलेवा संघर्ष देखा जा सकता है मगर वे केवल परिवार के लिए स्वार्थत्याग करने के लिए तैयार रहती हैं।

हाथियों के झुंड के केंद्र में मादाएं होती हैं - दादियां, मांएं, मौसियां, बेटियां, भांजी-भतिजियां। इस स्त्री सेना का एकमात्र उद्देश्य होता है बच्चों की सुरक्षा। जैसे ही कोई खतरा महसूस होता है, मांएं-मौसियां चीत्कार करके बच्चों को सावधान कर देती हैं और फिर खतरे की दिशा में मुंह करके कंधे से कंधा मिला कर अपने सीनों की एक दीवार बना देती हैं। बच्चे भाग कर उनकी छाती के, पेट के नीचे छुप जाते हैं।

हाथियों का कोई बंधा हुआ, संरक्षित इलाका नहीं होता। वे आज़ाद घूमते रहते हैं और विभिन्न झुंडों के बीच भी कोई टकराव नहीं होता। भूले-भटके मिल गए तो एक-दूसरे को सलामी देते हुए अपने रास्ते चलते रहते हैं। नर बच्चों को झुंड में तब तक बने रहने दिया जाता है जब तक उनके नुकीले गजदंत (tusks) नहीं निकल आते। इसके बाद उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है।

गजदंत वाले ये नर अकेले-दुकेले भटकते रहते हैं। अगर एक-दूसरे से मुलाकात हो गई तो एक-दूसरे से टकरा कर अपनी ताकत आज़माते हैं। अगर कोई शवाब पर आई हुई मादा मिल जाए तो उससे संभोग करने की जीतोड़ कोशिश करते हैं, उसके लिए आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, किंतु संभल कर। उनकी लड़ाई का उद्देश्य केवल सामने वाले की कुव्वत आज़माना होता है। यदि वह अधिक बलवान लगा तो चुपचाप पीछे हट जाते हैं, किंतु इस सावधानी के साथ कि कोई घायल न हो।

पैंतीस वर्ष पहले की बात है। मैं मैसूर के पठार पर बांदीपुर के जंगल में हाथियों की गिनती कर रहा था। शाम के समय हाथियों के झुंड तालाबों पर पानी पीने और डुबकी लगाने के लिए आते हैं। मैं उनकी गिनती करने के लिए मचान पर बैठा था। उसी समय अड़तीस हाथियों का एक बड़ा झुंड आया। इसमें एक बड़ी मादा शबाब पर थी और झुंड का सबसे बड़े गजदंतों वाला नर उसके पीछे-पीछे आ रहा था। स्पष्ट था कि झुंड के शेष नरों ने यह मान लिया था कि वह सबसे ताकतवर है। मादा और वह नर सबसे पहले पानी में उतर गए। इधर तालाब के किनारे बीस नरों ने इस प्रकार जोड़ियां जमाईं कि हर जोड़ी के दोनों नर समान ऊंचाई के थे। बड़े हाथियों से ले कर छोटे बच्चों तक - हर जोड़ी में दोनों हाथी लगभग एक ही आकार के थे। उधर तालाब में उतरी हुई जोड़ी की प्रणयलीला चल रही थी और इधर सब नरों ने अपने-अपने जोड़ी वाले के गजदंत में गजदंत फंसा कर और उसके माथे पर अपना माथा टिका कर उसे पीछे धकेलने का खेल शुरू कर दिया। इन सब हाथियों में से तीन जोड़ियां ऐसे बच्चों की थीं जिनके गजदंत अभी बाहर नहीं निकले थे। ये बच्चे केवल खिलवाड़ कर रहे थे। शेष हाथी सचमुच पूरी ताकत के साथ जूझ रहे थे। हाथियों में एक-दूसरे की ताकत आज़माने का यह खेल लगातार चलता रहता है।

हाथियों का सामाजिक जुड़ाव एक हद में रहता है। नर-मादा कोई भी ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करता, किंतु उनके

झुंड एक-दूसरे से दोस्ताना व्यवहार करते हैं। इसके उलट चींटे-चींटियों जैसे अत्यधिक सामाजिक संरचना से बंधे हुए परिवार अपने-अपने क्षेत्र की रक्षा करते हुए पड़ोसियों से हमेशा झगड़ते रहते हैं। हर समूह में एक रानी चींटी होती है जो सबकी मां होती है। शेष सब मज़दूर, सिपाही बहनें-बहनें होती हैं। सब मिलकर भोजन जुटाती हैं और उसे चबा-चबा कर एक-दूसरे को खिलाती हैं। इसके अलावा रानी चींटी अपने शरीर से एक प्रकार का रस बहाती रहती है जिसे सब चींटियां चाटती हैं। इसकी वजह से हर परिवार को एक विशिष्ट गंध मिल जाती है। अपने समूह की गंध को वे सुगंध मानती हैं और दूसरे समूह की गंध को दुर्गंध। जब भी कोई चींटी मिले तो उसे सूंघा जाता है। यदि उसमें अपने समूह की गंध नहीं है तो वह दुर्गंधवाली है, अपनी पक्की दुश्मन है, और उसे अपने इलाके से भगाना ज़रूरी है।

जब संभव हो तो दुश्मन के इलाके पर कब्ज़ा जमा लिया जाता है और इसके लिए 'हम चींटियों की बेटियां, नहीं डरेंगी मौत से' ऐसा मान कर मरने-मारने की लड़ाई लड़ी जाती है। किंतु ऐसी प्रतिस्पर्धा में भी चींटियां एकदम से लड़ाई में नहीं कूदतीं। शुरुआत में केवल अपनी ताकत का प्रदर्शन किया जाता है। एडवर्ड विल्सन ने चींटियों के जीवन का गहरा अध्ययन किया है। और इसका बड़ा रोचक विवरण दिया हैः

> "इन दो बाम्बियों की चीटियों के समूह मिले और एक-दूसरे के सामने नाचने लगे। यह कोई ृंगार रस का नाच नहीं था। यह दो बाम्बियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र को अपने कब्ज़े में रखते समय किया जाने वाला ताकत का प्रदर्शन था। इसमें किसी भी चींटी को खतरा नहीं था; मरना तो दूर, घायल होने का भी खतरा नहीं था। यह कुछ इस प्रकार था जैसे पहलवान एक-दूसरे के सामने ताल ठोकते हैं। दोनों बाम्बियों की चीटियों को लग रहा था कि इस शक्ति प्रदर्शन में वे ही जीतेंगी। यह शक्ति प्रदर्शन युद्ध की शुरुआत नहीं था। जिस प्रकार मनुष्य की सेनाएं जुलूस में चलती हैं या युद्धाभ्यास करती हैं, यह लगभग वैसा ही था।"

नर हाथियों जैसे पशु अपनी लड़ाई इस प्रकार के शक्ति प्रदर्शन तक ही सीमित रखते हैं। प्रतिस्पर्धियों में से कोई एक जब यह समझ जाता है कि यह लड़ाई महंगी पड़ सकती है तब वह पीछे हट जाता है; एक-दूसरे को घायल करने से दोनों बचते हैं। कोई भी दूसरे को जान से मारने की नहीं सोचता। किंतु प्रकृति के घटनाक्रम में सामाजिक प्रजातियों ने यह संयम छोड़ दिया है। जब परिवार पर खतरा होता है तब एक अकेले जंतु की कोई कीमत नहीं होती, पूरे परिवार का विचार करना पड़ता है। इसलिए अपने-अपने समूह के हितों की रक्षा के लिए हर सदस्य मरने के लिए तैयार रहता है। अपने क्षेत्र की रक्षा करने के लिए जान देने और दुश्मन की हत्या करने को तत्पर होता है। दूसरी ओर एकल पशुओं में जिस प्रकार स्वार्थत्याग की कठोर मर्यादा होती है उसी प्रकार क्रूरता की भी होती है।

किंतु सामाजिक जंतुओं में जितना पराकाष्ठा का स्वार्थत्याग देखा जाता है उतनी ही क्रूरता भी। अतः ऐसी चीटियों में शक्ति प्रदर्शन समाप्त होते ही लड़ाई भी छिड़ सकती है। विल्सन ने इसका भी विवरण दिया हैः "अब शक्ति प्रदर्शन का दिखावा समाप्त हो गया है। चींटियों ने सीधे खड़े हो कर अपनी ऊंचाई को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना या पेट फुलाकर अपना आकार बड़ा करके दिखाना छोड़ दिया है। अब वे एक-दूसरे पर चढ़कर अपने आरी समान जबड़ों से दुश्मनों के शरीर के टुकड़े करने की कोशिश कर रही हैं। शरीर के जिन भागों पर कड़ा कवच नहीं है उनमें विष डाला जा रहा है। घायल दुश्मनों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। शीघ्र ही पूरा मैदान हताहत चींटियों से भर गया। शत्रु सेना की मुखिया चींटी के टुकड़े कर दिए गए। दो बाम्बियों में कभी युद्ध विराम समझौता नहीं होता और न कभी दोस्ती होती है। बाम्बी के क्षेत्र पर एक ही परिवार का राज बनाए रखना अनिवार्य होता है। उसकी रक्षा किसी भी कीमत पर की जाती है, ज़रूरी हो तो जान देकर भी।"

और अपनी मानव प्रजाति के बारे में क्या कहा जाए? हमारे निकट सम्बंधी बंदर अपने क्षेत्रों की रक्षा करते हैं, इसके लिए दूसरे झुंडों से लड़ते भी हैं। किंतु जिस प्रकार चीटियों में व्यापक हिंसा होती है वैसी बंदरों में नहीं होती। फिर भी बंदरों में हिंसक प्रवृत्ति तो होती ही है। झुंड के

पुराने नेता को हराकर जब नया नर नेता बन जाता है तब वह पहले नेता के सारे बच्चों को उनकी मांओं से छीनकर मार डालता है। जैव विकास के दौरान मानव को भी यह हिंसक प्रवृत्ति विरासत में मिली है। चाहे बंदरों में ऐसा न होता हो किंतु मानव में यह हिंसक प्रवृत्ति टोलियों और गुटों के संघर्षों में चरम पर दिखाई देती है। यदि हम हाथियों के समान होते तो कितना अच्छा होता। कौरव-पांडवों की लड़ाई केवल भीम और दुःशासन के गदायुद्ध तक सीमित रहती और महाभारत के युद्ध जैसा भीषण नरसंहार होता ही नहीं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में....

स्रोत मई 2015
अंक 316

- **सवा लाख साल पुराने आभूषण**
- **जब पौधे ने डंक मारा**
- **छोटे, फिर भी महानः सर्वव्यापी बैक्टीरिया**
- **जारी है स्वार्थ का सफर**
- **डबल एक्शन दवा - एक चाबी, दो ताले**